B. Ed 2018 - 20 DATE - 28.04.2020

C-10 CREATING AN INCLUSIVE SCHOOL

Q विशिष्ट बालकों की शिक्षा का उद्देश्य क्या है? वर्णन करें ?

Ans विशिष्ट बालकों की शिक्षा का उद्देश्य निम्न है;

मानसिक विकास :-

विशिष्ट बालकों की शिक्षा का उद्देश्य उनका मानसिक (बौद्धिक) विकास करना है, ताकि वह अपने बुद्धिमता का प्रयोग व्यक्ति के साथ रहकर कर सके उसे पूर्णतः विकसित कर सके।

शारिरिक विकास :-

शिक्षा का उद्देश्य मानसिक विकास ही नहीं बल्कि शारिरिक विकास भी है, विशिष्ट बालकों और विशेष तौर पर विकलांग बालकों की शिक्षा देने का उद्देश्य तो यह है कि उनकी शारिरिक दुर्बलता एवं विकलांगता की कमी महसुस न हो।

कलात्मक विकास :- विशिष्ट या असाधारण बालकों में इतनी कलात्मक प्रतिभा होती है कि यदि शिक्षा के द्वारा उन्हे उचित दिशा में मार्गदर्शन दिया जाय अथवा सही अवसर प्रदान किया जाय तो वे कलात्मक का भरपुर उपयोग कर सकते है। इससे हीन भावना दुर होने के साथ-साथ आजिविका के नये स्त्रोत बनते है। जिसके फलस्वरुप वे आनंद से जीवनयापन करते है।

व्यवसायिक दक्षता :-

विशिष्ट बालकों को दो रुपों में बाँटा गया है (1) प्रतिभावान 2. मन्दबुद्धि अथवा पिछड़े इनमें मन्दबुद्धि बालको को इस प्रकार की शिक्षा देनी चाहिए जिससे उनकी व्यवसायिक उन्नति हो सके।

Scanned with CamScanner

मन्द बुद्धि बालकों को कम से कम इस प्रकार की व्यवसायिक शिक्षा दी जानी चाहिये कि वे अपना जीवन यापन कर सके। इसी प्रकार शारीरिक रूप से विकलांग बालकों के लिए भी उनसे सम्बंधित प्रशिक्षण दिये जाने चाहिये ताकी वे रोजगार से जुड़कर आत्मनिर्भर बन सके।

चारित्रिक एवं आध्यात्मिक विकास –

समान्य बालकों की तरह विशिष्ट बालकों के लिए शिक्षा का उद्देश्य उनका चारित्रिक एवं आध्यात्मिक विकास होना चाहिये ताकि उनका सही दिशा में विकास हो सके क्योंकि इनका सीधा संबंध मानसिक विकास से है।

अध्यापकों का चयन –

अध्यापकों को विशिष्ट बालकों को पढ़ाने के लिए प्रशिक्षण भी देना चाहिए। साधारण बालकों को पढ़ाने का अनुभव विशिष्ट बालकों के शिक्षण के लिए बहुत आवश्यक है। प्रशिक्षण प्राप्ति के साथ-साथ अध्यापक में विशिष्ट बालकों को निर्देशित करने में रुचि हो।

विशिष्ट संसाधनों का प्रयोग – विशिष्ट प्रकार के बालकों के लिए विशिष्ट शिक्षण-विधि, विशिष्ट अध्यापक, विशिष्ट सहायक सामग्री, विशिष्ट पाठ्क्रम, विशिष्ट अभ्यास आदि सभी संसाधनों की आवश्यकता है, दूसरे शब्दों में हम कह सकते है कि इसके लिए शिक्षा का विशेष आयोजन होना चाहिये ताकि वे सामान्य बालकों के समान विकास कर सके। यदि प्रतिभावना है तो उसका भी विकास हो सके।

–0–